INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 6 | JULY – 2021

आर्थिक, सामाजिक समरसता और भारत का संघीय ढाँचा

डॉ. रामलाल शर्मा
असोसिएट प्रोफ़ेसर, अर्थशास्त्र विभाग, CEO गवर्मेन्ट कालेज, संजोली, शिमला.

हमारा भारत देश धर्म और दर्शन के देश के रूप में जाना जाता है। यहाँ अनेक धर्मों को मानने वाले सदियों से एक साथ रह रहे हैं। हमारा देश विविधताओं से भरा हुआ है, यह विविधता कई स्तरों पर देखी जा सकती है। भाषा, धर्म, खानपान, रहन-सहन, रीति-रिवाज और ऐसी ही न जाने कितनी विविधतायें हमारे देश में हैं। भौगोलिक, आर्थिक सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और निसंदेह वैचारिक विविधता ही हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति है। इन तमाम विविधताओं के बीच जो सूत्र हमें एक बनाता है वो है भारत देश के रूप में हमारी साकार कल्पना। एक भारत देश अपने आप में एक विश्व है क्योंकि विश्व में निहित सभी विविधतायें कुछ अपवादों को छोड़कर भारत मे मिल जाती हैं। हमारे यहाँ धरती का स्वर्ग कश्मीर है तो रेतीला राजस्थान भी है। सुजलाम-सुफलाम बंगाल की धरती है तो सूखा कच्छ भी है। नैनीताल, आसाम, शिमला और हिमांचल जैसे ठंडे क्षेत्र हैं तो केरल और भुवनेश्वर जैसे गर्म स्थान भी। मैदानी, पठारी, पहाड़ी और समुद्री किनारों से लगा हुआ यह देश सारे जग में अनूठा है। इस देश की तुलना में भौगोलिक दृष्टि से कोई दूसरा देश इस पृथ्वी पर तो नहीं है। प्रकृति ने भारत को इस धरा पे सबसे समृद्ध बनायाहै। शायद यही वजह रही होगी जो हड़प्पा मोहोनजोदड़ो जैसी प्राचीनतम संस्कृति इस देश में पाई गई। दुनिया का प्राचीनतम ग्रंथ ऋगवेद इसी धरती पर लिखा गया। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सबसे समृद्ध संस्कृत भाषा इसी धरती पे अस्तित्त्व में आयी। इस देश की संस्कृति ही थी जो वसुधैव कुटुम्बकम् की बात सबसे पहले करती है। यह देश रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य एक साथ देता है। मनुष्य के रूप में पैदा हुए लोगों को मनुष्यता का अर्थ बताता है। भौतिकता की तुलना में आध्यात्म का महत्त्व प्रतिपादित करता है।

पूरी दुनिया जब अंकों के गणित में उलझी हुई थी, तब यह देश शून्य की खोज करता है। और सारी दुनिया के गणित को सही दिशा देता है। युद्ध करके अधिकारों की लड़ाई लड़ने की परम्परा में एक गाँधी इसी देश से अहिंसा की बात करता है, सत्याग्रह करता है और बिना किसी हथियार के इस देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराता है। यह भारत देश ही है जहाँ औरतों को सदियों से बराबरी का अधिकार दिया गया। यहाँ देवी को आदिशक्ति कहा गया। यह देश भारत ही है जहाँ **36** करोड़ देवी-देवता आज भी पूजे जाते हैं। इस देश की मिट्टी में दुनिया के राजतिलक की शक्ति है। यह अनायस नही है कि पूरी दुनिया मंदी की चपेट में है और हमारे नैनौ में `नैनौ कार" का सपना साकार हो रहा है। ``**21** वीं सदी भारत की सदी है।" दुनिया भर के विद्वान यह बात हवा में नहीं कर रहे हैं। यह देश सारे जहाँ से अच्छा था, है और रहेगा। इस देश की जड़े बहुत गहरी हैं, हमें मिटाने की सोचने वाला खुद मिट जायेगा। आज हमारे पड़ोसी देश की जो हालत है, उससे यह बात आसानी से समझी जा सकती है। सच कहा है किसी ने ``जो दूसरों के लिए खड्डा खोदता है वह उसमे खुद ही गिरता है।" ``अनेकता में एकता एक सूत्र है जो समाज के विभिन्न समूहों में रहने वाले लोगों तथा भौतिक व मानसिक रूप से विभिन्न होते हुवे एक होने के ज्ञान को देने वाले तत्त्वज्ञान के मध्य सहयोग का निर्माण करता है।" सच कहें तो यह सूत्र पूरी दुनिया को इसी भारत देश से मिला है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है। यहाँ लोकनायक वही बनेगा जो समन्वय की बात करेगा। जो जोड़ने की बात करेगा,

जो सबको साथ में लेकर आगे बढ़ने की बात करेगा। इसके विपरीत आचरण करने वाला भोली-भाली जनता को अल्प समय के लिये बरगला सकता है, पर अधिक समय तक उसकी चाल कामयाब नहीं हो सकती।

भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के साथ-साथ बाजारीकरण की स्थितियों ने मनुष्य अवसरवादी हो गया है। उसकी संवेदनायें खत्म होती जा रही है। इस कारण जैसे देश में भी भाईभतीजावाद, लालफीताशाही और आचरण की पवित्रता खत्म होते हुए देखी जा सकती है। अपने निजी फायदे के लिए लोग हर तरह की चाल चलने के लिये तैयार रहते हैं। भाषा, प्रान्त, शिक्षा और धर्म को हथियार बनाकर लोगों की भावनावों को भड़काया जाता है; और उसी पे सियासत का खेल है, जो इसी देश में खेला जाता है। यह सब सिक्के का दूसरा पहलू है जिसे समझना बहुत जरूरी है। देश की ये जो दूसरी तस्वीर है, वह बड़ी खतरनाक है। हसन जमाल अपने एक लेख में लिखते हैं कि, ``जहाँ तक हिन्दुस्तानीयत पर फक्र करूँ? कीड़ों की तरह कुलबुलाती आबादी पर? दरहम-बरहम हो चुके निजाम पर? सरमायादारों के ऐजेन्टो/नौकर बने निमनिहाद लीड़रों पर? वतन की आबरू की गिरवी रखनेवाली सरकारों पर? अपने आपको आका और जनता को गुलाम समझने वाले लालफीताशाही नौकरशाहों पर? जानवरों से बद्‌तर जिंदगी गुजारनेवाले भूखे नंगे हिन्दुस्तानियों पर? चंद लोगों की खुशहाली और करोड़ो की बदहाली पर? सिविक सेंस की धज्जिया बिखेरते हर खास व आम पर? बद्‌तमीज, बेहूदा व खुदगर्ज नयी नस्लपर? हरामखोर मुलाजिमों पर? जिम्मेदारियों से गाफिल समाज पर? किस किस पर फक्र करूँ? मैंने जिस वतन का ख्वाब देखा था, वह यह नहीं है।"

हसन जमाल जी इस देश की जो तस्वीर पेश कर रहे हैं वह भी सही है। पर प्रश्न यह उठता है कि क्या सिर्फ यही सही है? यह ठीक है कि भारत गरीबी का महासागर है जिसमें अमीरी के कई टापू उभर आये हैं। पर इन टापूओं का उपयोग भी तो भारतवासी ही कर रहे हैं। बाजारीकरण में लाख बुराईयाँ हैं, पर इस बाजारीकरण के युग में भारत सबसे बड़े बाजार के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया भारत को महाशक्ति मान रही है। हमारी **100** करोड़ से भी अधिक आबादी ही हमारी सबसे बड़ी ताकत बन गई। हम दूनिया के सबसे बड़े उपभोक्ता देश हैं, हमें कौन नहीं पूजेगा? तो यह सब स्थितियाँ हमें समझनी होगी। सिर्फ आदर्शों से काम नहीं चलनेवाला, हमे यथार्थ की ठोस जमीन पर ही रहकर परिस्थितियों का मुँहतोड़ जवाब देना होगा।

किसी के ऊपर इल्जाम लगा देने भर से हमारी जिम्मेदारियाँ पूरी नही हो जायेंगी। हमें अपने अंदर एक ``आत्म अनुशासन" लाना होगा।

अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा। चुप रहने से काम नहीं चलनेवाला, हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ना होगा। अन्याय शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी होगी। बंदूक और पूँजी दोनों से ही लड़ना होगा। आतंकवाद जैसी गंभीर समस्या से कारगर तरीके से निपटने के लिए हमें सजग होना होगा। अपने आस-पास की परिस्थितियों पर पैनी निगाह रखनी होगी। घर के दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर सो जाने से हम परेशानियों से नहीं बच सकते। राजनीति, मीडिया और बाजार हमने मनोविज्ञान को समझता है। हमारी बेजुबानी को जानता है, हमारी कायरता को पहचानता है। इसलिए उससे बचकर नही, उसमे शामिल होकर उसे बदलने की कोशिश करनी ही होगी।

एक बात गहराई से यह भी समझनी होगी कि आज अधिकांश लोग भ्रष्ट, बेईमान और गुटबाजी में क्यों व्यस्त हैं? किसी शायर ने खूब कहा है कि

``आज के जमाने में ईमानदारी वही हैं
जिसे बेईमानी का अवसर नहीं मिला।''

बात साफ है, हम ईमानदारी-ईमानदारी चिल्लाते तो हैं, पर जैसे ही हमारे हाँथ में पद, पैसा और प्रतिष्ठा आती है, हमारी चाल बदल जाती है। इसका कारण यह है कि लोकतांत्रिक देशों में अधिकार, कानून, अवसर और अभिव्यक्ति की तमाम बातें सिर्फ कोरी और लुभावनी कल्पनायें हैं। हकीकत से इनका कुछ भी लेना-देना नहीं हैं **15** अगस्त **1947** को इस देश को सही मायनों में आजादी नहीं मिली। उस दिन तो बस सत्ता का हस्तांतरण हुआ है। सत्ता की चाभी विदेशियों के हाँथ से निकलकर इस देश के पूँजी-पतियों के हाथ में आ गई। पिछले साठ साल की राजनीति मोटे तौर पर परिवारवाद, हिंदुत्ववाद, अल्पसंख्यकवाद, आरक्षणवाद और ऐसे ही बहकानेवाले मु ोें पर सिमटी हुई दिखाई पड़ती है। सत्ता और आम आदमी के बीच `सुविधाभोगी संपन्न वर्ग' लगातार दलाली कर रहा है। ये इस देश की आम जनता से जोंक की तरह लिपटे हैं। उनका खून पी-पी कर मोटे हो रहे हैं। `लिमिटेड' और `मल्टिनेशनल' हो रहे हैं। उदाहरण के तौर पर -

1) इस देश में सबको अपना अखबार चलाने का अधिकार हैं। पर इसे चलाने का आर्थिक सामर्थ्य कितने लोगों के पास हैं?

2) इस देश में सब लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है, लेकिन क्या सचमुच यह स्वतंत्रता सबको है? नहीं बिलकुल नहीं! यही कारण है कि हर गली में एक गुंडा दादा शान से घूमता है और हम शरीफ लोग बंद खिड़कियों से तमाशा देखते हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो केवल पैसेवाले गुंडों, पूँजी-पतियों और नेताओं कों है। हमें आपको कहाँ है?

3) मीडिया पर शासकवर्ग का वर्चस्व है, वह पूँजी-पतियों के हाँथ का खिलौना है। वह पैसा बनाने का जरिया है। उदाहरण के तौर पर हाल ही में जब महाराष्ट्र में मराठी बनाम उत्तर भारतीय का मु ा गरमाया था, तो हिंदी और मराठी मीडिया भी दो घड़ों में बट गयी थी। एक ही मालिक के दो न्यूज चैनल अलग-अलग बोली बोल रहे थे।

स्टार-न्यूज हिंदी में तो स्टार माझा मराठी में आयबीएन लोकमत मराठी तो आयबीएन 7 हिंदी, झी न्यूज हिंदी तो झी मराठी, मराठी में। हिन्दी चैनलों की टीआरपी हिन्दी प्रदेशों से बढ़ती है तो वह उत्तर भारतीयों के पक्ष में बोल रहा था। प्रादेशिक चैनलों की टीआरपी प्रदेश में बढ़ सकती है, इसलिए उसका झुकाव `मराठी माणूस' की तरफ दिखा। पर सच्चाई यह है कि यह मीडिया सिर्फ और सिर्फ अपने फायदे की ओर झुका था। उसे लाभ कमाना था। आदर्श और सच्चाई का ढोल नहीं पीटना था।

समग्र रूप से हम यह कह सकते हैं कि अनेकता में एकता हमारी सबसे बड़ी शक्ति है, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए। लेकिन एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक देश के नागरिक के रूप में हमें एक बहुत बड़ी लड़ाई भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अफसरशाही और लुंज-पुंज व्यवस्था के खिलाफ लड़नी है, जिसकी सही मायनों में अभी हमने शुरूआत भी नही की। जिस तरह एक और लड़ाई हमें इस आजादी को सही मायनों में बनाये रखने के लिए लड़नी होगी। जिसकी शुरूआत हमें अपने आप से करनी होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Abad, Florencio. **1993.** 'People's Participation inGovernance: Limits and Possibilities—"e PhilippineCase', in E. Garcia, J. Macuja and B. Tolosa (eds),Participation in Government: #e People's Right. Quezon:Ateneo de Manila University Press, p. **159.**
2. Bedi, Narinder. **1999.** 'Development of Power', in D.Rajashekhar (ed.), Decentralised Government andNGOs: Issues, Strategies and Ways Forward. New Delhi:Concept Publishing Company.Bond, Michael. **2000.** '"e Backlash against NGOs',Prospect, April.
3. Booth, David(ed.). **2003.** Fighting Poverty in A"ica: ArePRSPs Making a Di%erence? London: OverseasDevelopment Institute.Brass, Paul R. **1990.** #e New Cambridge History of India:#e Politics of India since Independence. Cambridge:Cambridge University Press.